17 अप्रैल 2008, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

तीर्थंकर महावीर के विराट व्यक्तित्व को समझने के लिये उन्हें, हमें विरागी-वीतरागी दृष्टिकोण से देखना होगा।

ह्न वीतरागी भगवान महावीर, पृष्ठ-5

वर्ष : 31, अंक : 02 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

अप्रैल (द्वितीय), 2008 प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

अष्टान्हिका महापर्व सानन्द सम्पन्न

01. इटावा (उ.प्र.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन चन्द्रप्रभ मंदिर डांडा में दिनांक 14 से 21 मार्च, 08 तक अष्टान्हिका पर्व के अवसर पर ब्र.अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना एवं पण्डित मनीषकुमारजी शास्त्री पिड़ावा के निर्देशन में श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान एवं धार्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर का उद्घाटन श्री चंद्रप्रकाशजी इटावा के करकमलों से ध्वजारोहण पूर्वक हुआ। इस प्रसंग पर पण्डित अजितकुमारजी शास्त्री फिरोजाबाद एवं पण्डित योगेशजी शास्त्री अलीगंज के प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही मंगलायतन से पधारे छात्र अकलंकजी जैन, आगमजी जैन एवं पवनजी जैन ने अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं बाल कक्षाओं का संचालन किया।

ज्ञातव्य है कि इस शिविर का आयोजन श्री स्वरूपचंदजी जैन परिवार इटावा की ओर से किया गया था।

02. अलवर (राज.) : यहाँ श्री रत्नत्रय जिनमंदिर, चेतन एन्क्लेव में अष्टान्हिका महापर्व के अवसर पर नवलब्धि मण्डल विधान व शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इस प्रसंग पर पण्डित कोमलचंदजी द्रोणगिरि, पण्डित किशनचंदजी अलवर, पण्डित मधुकरजी जलगाँव के प्रवचनों का लाभ समाज को प्राप्त हुआ साथ ही बालवर्ग हेतु विशेष कक्षाओं का भी आयोजन किया गया। विधि-विधान के समस्त कार्यक्रम पण्डित तन्मयजी शास्त्री एवं पण्डित सुमित शास्त्री के सहयोग से सम्पन्न हुये। पर्व के अन्तिम दिवस पर यागमण्डल विधान का भी आयोजन किया गया।

03. अजमेर (राज.) : यहाँ श्री सीमंधर जिनालय, पुरानी मंडी प्रांगण में अष्टान्हिका महापर्व के अवसर पर नियमसार कलश मंडल विधान का आयोजन किया गया।

दिनांक 14 मार्च को मंगल कलश शोभायात्रा आयोजित की गई तत्पश्चात् पूर्व जिला प्रमुख श्री पुखराजजी पहाड़िया द्वारा ध्वजारोहण किया गया। विधान का उद्घाटन श्री प्रेमचंदजी जैन, महावीर टेन्ट हाउस ने किया।

इस अवसर पर पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर के विधान की जयमाला व नियमसार ग्रन्थ के आधार से हुये प्रवचनों का लाभ समाज को मिला।

विधि-विधान के समस्त कार्यक्रम पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, पण्डित अश्विनजी नानावटी बाँसवाड़ा एवं श्री हीराचंदजी बोहरा के सहयोग से सम्पन्न हुये। रात्रि में अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किये गये।

तीन लोक मण्डल विधान सम्पन्न

भवानीपुर (कोलकाता) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में श्री दिगम्बर जैन मंदिर पद्मोपुकुर, भवानीपुर में दिनांक 1 से 8 अप्रेल, 08 तक आठ दिवसीय तीन लोक मण्डल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर देश विदेश में ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रतिदिन प्रात: समयसार की 14वीं गाथा पर मार्मिक प्रवचन हुये। समाज की विशेष मांग पर अन्तिम दिनों में सायंकाल भी आपके सरस प्रवचनों का लाभ मिला। प्रारंभ में चार दिन ब्र. कैलाशचन्दजी 'अचल' ललितपुर के योगसार पर सारगर्भित प्रवचन हुये। आपके अतिरिक्त पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर द्वारा प्रतिदिन 'तीन लोक के अकृत्रिम चैत्यालय' विषय पर हुई विशेष कक्षा एवं दोपहर में मोक्षमार्ग प्रकाशक पर हुये प्रवचनों का समाज ने भरपूर लाभ लिया।

विधि-विधान के समस्त कार्यक्रम बाल ब्र. पण्डित जतीशचंदजी शास्त्री, दिल्ली के कुशल निर्देशन में पण्डित मनीषकुमारजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित सुबोधकुमारजी शास्त्री शाहगढ़, पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल, पण्डित कांतिकुमारजी इन्दौर एवं स्थानीय विद्वान अभिनयजी शास्त्री ने सम्पन्न कराये।

विधान का आयोजन श्री फूलचंदजी, राजमलजी, भागचंदजी, कमलकुमारजी एवं अशोककुमारजी पाटनी परिवार की ओर से किया गया था।

मंगलायतन, अलीगढ में 18 मई से 4 जून तक और श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में 3 से 12 अगस्त तक आयोजित शिविरों में अवश्य पधारें।

मंगलायतन प्रशिक्ष

ण–शिविर पत्रिका

सम्पादकीय –

4

चलते–फिरते सिद्धों से गुरु

ह्न पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

'यद्यपि मुनिमार्ग अत्यन्त स्वाधीन, स्वतंत्र और परनिरपेक्ष होता है, फिर भी करुणा की साक्षात् मूर्ति होने से दु:खमय संसार सागर में गोते लगाते हुए जीवों को दु:खी देखकर मुनिराजों को सहज ही ऐसी करुणा आती है कि इतने अनुकूल संयोगों में भी यदि तत्त्वज्ञान इनके हाथ नहीं लगा तो फिर पुन: यह दुर्लभ अवसर मिलना सहज नहीं है। अत: अपने ध्यान–अध्ययन में से थोड़ा सा समय इन्हें दे दिया जाय और हमारे निमित्त से इनका भला हो जाय तो इस (छठवें गुणस्थान की) भूमिका में मेरे द्वारा इससे बढ़ कर और कोई करने योग्य कार्य नहीं हो सकता है। ज्ञानदान ही सबसे बड़ा दान है।'

यह सोच–सोच कर आचार्य स्वयं भी तत्त्वोपदेश देते हैं और अन्य उपाध्याय वर्ग को भी प्रवचन करने की प्रेरणा करते हैं, आदेश देते हैं।

भव्यजीवों के भाग्य से आचार्यश्री ने अपने उपदेश को प्रारंभ करते हुए दिगम्बर मुनि के स्वरूप और चर्या के संबंध में कहा ह्न

'लोकोत्तर मोक्ष सुख का साक्षात् साधन सम्यक्त्व सहित दिगम्बर मुनिपना ही है। णमोकार महामंत्र के 'णमो लोए सव्व साहूणं' पद द्वारा मुनि को पंचपरमेष्ठी में सम्मिलित कर नमन किया गया है। ये वीतराग पथ के पथिक हैं। आत्मा की साधना एवं कारण परमात्मा की आराधना ही परमात्मपद प्राप्त करने का एकमात्र उपाय है। अत: सभी इस दिशा में अग्रसर हों ह्न ऐसी हमारी भावना है।'

दिशायें ही हैं अम्बर जिनके ऐसे दिगम्बर 'शब्द' को सार्थक करनेवाले मुनिराज आरंभ और परिग्रह के सर्वथा त्यागी होते हैं।

'पाँचों इन्द्रियों के विषयों पर सम्पूर्ण रूप से विजय प्राप्त करनेवाले मुनिराज चारों कषायों के भी विजेता होते हैं। तपस्वी साधु निरन्तर ज्ञान, ध्यान और तप में ही लीन रहते हैं।'

'मुनिराजों को पापभावरूप विकथायें करने का तो प्रश्न ही नहीं उठता। विशिष्ट मुनिराज तो शास्त्रों की व्याख्यायें करने, शास्त्र लिखने, दीक्षा एवं उपदेशादि देने से भी बचते हैं। इनकी दैनिक चर्या में इन कार्यों के कोई निर्धारित कार्यक्रम नहीं होते। ये तो सदैव ज्ञान–ध्यान में ही रहना चाहते हैं। कदाचित् दु:खी संसारी तत्त्वज्ञान से अनभिज्ञ जिज्ञासु जीवों पर करुणा भाव आ जावे तो प्रवचन आदि शुभ क्रियायें करते तो हैं, किन्तु इन्हें हेय मानते हैं ह्न ऐसा स्वरूप होता है दिगम्बर साधुओं का !'

ऐसे ज्ञानी–ध्यानी **चलते–फिरते सिद्धों जैसे साधुओं** को देख कर उनकी वन्दना के लिए, किसका मस्तक श्रद्धा से नहीं झुक जायेगा ? और किसकी श्रद्धा समर्पित नहीं होगी उनके चरणों में ?

मुनिराजों की बातचीत, उनका खान–पान, चलना–फिरना, उठना–बैठना, संयम और ज्ञान के उपकरणों का उठाना–धरना तथा मल–मूत्र, कफादि का क्षेपण करना भी इतना निर्दोष और विवेक पूर्वक होता है कि जिससे द्रव्य हिंसा का तो प्रश्न ही नहीं होता, किसी व्यक्ति विशेष से अनुराग न होने से रागादि रूप भावहिंसा भी नहीं होती।

मुनिराजों की एक–एक क्रिया और उनकी दिनचर्या की महिमा का बखान करना असंभव नहीं तो कठिन तो है ही।''

आचार्यश्री ने आगे कहा ह्न ''जगतजन मुनि के अन्तर्बाह्य स्वरूप से सुपरिचित हो, उनके तप–त्याग और आत्मसाधना को भलीभांति जानकर उनका अनुसरण करके अपना कल्याण करे, मुनिराज की प्रत्येक धार्मिक क्रिया के आयोजनों का प्रयोजन जानकर सही दिशा में धर्माचरण करे ह्न इस पावन उद्देश्य से दिगम्बर मुनि की एक–एक आदर्श क्रिया और उनके द्वारा प्रतिपादित वीतरागतावर्द्धक उपदेशों की चर्चा भी अपेक्षित है। अन्यथा जगत जन सन्मार्ग से भटक सकते हैं।'' ह्न

'दिगम्बर मुनि के स्थायी आवास हेतु कोई मठ–मन्दिर या आश्रम आदि नहीं होते। वे चतुर्मास के सिवाय एक स्थान पर अधिक नहीं रुकते। मुनिराज के लिए यह कोई ऊपर से लादा गया प्रतिबंध नहीं है; बल्कि वे वैराग्यरस से ऐसे आप्लावित होते हैं कि श्रावकों से उन्हें ऐसा अनुराग ही नहीं होता कि वे एक जगह अधिक रुकें। वे एकान्तप्रिय ही होते हैं, वर्षा ऋतु में जीव राशि की प्रचुर उत्पत्ति होने के कारण करुणा सागर मुनिराजों को सहज ही विहार करने का भी भाव नहीं आता और निर्मोही होने से बिना कारण एक स्थान पर रुकने का भी भाव नहीं आता। उनके सभी कार्यक्रम सहज होते हैं। यही कारण है कि वे कभी किसी का आमंत्रण स्वीकार नहीं करते। उन्हें किसी तिथि विशेष पर कहीं किसी कार्यक्रम विशेष में पहुँचने का विकल्प भी नहीं होता। इसीलिये उन्हें अतिथि कहा जाता है। जिसके आने–जाने की तिथि निश्चित हो वे ही वास्तविक अतिथि हैं। उक्त परिभाषा के अनुसार मुनिराज ही सच्चे अतिथि हैं।

निर्मोही दिगम्बर मुनिराज की वृत्ति अनन्तानुबंधी आदि तीन चौकड़ी के अभाव के कारण जगत से अत्यन्त निरपेक्ष हो जाती है, इसकारण वे जगत के लौकिक तो क्या, धार्मिक आयोजनों में सम्मिलित होने के लिए भी पहले से अपना कार्यक्रम नहीं बनाते। समस्त शुभाशुभ कार्यों के व्यापार से विमुक्त रहते हैं तथा चार आराधनाओं में सदा लीन रहते हैं।

'दिगम्बर मुनिराज का किसी के प्रति शत्रुता व मित्रता का भाव नहीं होता, उन्हें सांसारिक सुख–दु:ख में साम्यभाव रहता है। निन्दा–प्रशंसा में विषाद व हर्ष नहीं होता। कंचन–कांच ह्न दोनों को पुद्गलपिण्ड के रूप में ही देखते हैं। जीवित रहने और मरण के प्रसंग में हर्ष–विषाद नहीं करते।

'मुनिराज मुख्यतया रत्नत्रय की भावना से निजात्मा को ही साधते हैं।'

'दिगम्बर मुनि आत्मसिद्धि के लिए सम्यग्दर्शन–ज्ञान–पूर्वक सम्यक्–चारित्ररूप मोक्षमार्ग का साधन करते हैं, लौकिक विषय में किसी से कुछ नहीं कहते, हाथ–पांव आदि के इशारे से भी कुछ नहीं दर्शाते। मन से भी कुछ चिन्तवन नहीं करते हैं। केवल शुद्धात्मा में लीन होकर अंतरंग व बाह्य वाग्व्यापार से रहित निस्तरंग समुद्र की तरह शान्त रहते हैं। जब वे स्वर्ग–मोक्ष के मार्ग के विषय में ही किंचित् भी उपदेश या आदेश नहीं करना चाहते तो लौकिक उपदेशादि का तो प्रश्न ही नहीं उठता।'**(क्रमश:)**

मंगलायतन चलिये फैडरेशन से जुड़िये ! फैडरेशन का नारा है ह्न भावी इतिहास हमारा है !! हमारे उद्देश्य ह्न आत्मानुभूति व तत्त्वप्रचार !!!

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का उन्तीसवाँ राष्ट्रीय अधिवेशन

(रविवार,दिनांक 25 मई 2008)

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का उन्तीसवाँ राष्ट्रीय अधिवेशन रविवार दिनांक 25 मई 2008 को तीर्थधाम मंगलायतन, अलीगढ़ में आयोजित होने जा रहा है। उक्त अधिवेशन में फैडरेशन द्वारा अब तक किये गये कार्यों की समीक्षा तथा आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा तय की जायेगी।

इस अधिवेशन में फैडरेशन की शाखाओं के सदस्य तो उपस्थित होंगे ही आप सभी आत्मार्थी महानुभाव भी इस अवसर पर सादर आमंत्रित हैं।

कृपया अपने आगमन की पूर्व सूचना निम्नांकित सम्पर्क सूत्रों पर अवश्य देवें ताकि आपके आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था की जा सके।

सम्पर्क सूत्र :–

1. पण्डित पीयूषकुमार शास्त्री, संगठन मंत्री, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए–4, बापूनगर, जयपुर–15 (राज.) **Mob. :** 9413347829. **E-Mail :** ptstjaipur@yahoo.com
2. पण्डित अशोककुमार लुहाड़िया, निदेशक, तीर्थधाम मंगलायतन, आगरा–अलीगढ़ मार्ग, निकट हनुमान चौकी, सासनी, महामायानगर (उ. प्र.) **Mob. :** 9897890893.

आत्मार्थी युवा साथियों यदि आप...

ह्न आत्मकल्याण के मार्ग में लगना चाहते हों
ह्न तत्त्वप्रचार का कार्य करना चाहते हों
ह्न समाज को सदाचार व श्रावकाचार के मार्ग पर लाना चाहते हों
ह्न धर्म व संस्कृति के उत्थान व प्रचार–प्रसार की इच्छा रखते हों
ह्न संगठन सम्बंधी कार्यों में रुचिवंत हों
ह्न युवाओं के एकमात्र रचनात्मक संगठन अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन से जुड़कर अपनी रचनात्मकता को नई दिशा देना चाहते हों तो.....

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के 29 वें राष्ट्रीय अधिवेशन में अवश्य भाग लीजिये।

हमारा हार्दिक आमंत्रण है।

क्या आपने यह कर लिया है ?

(1) क्या आपने फैडरेशन के राष्ट्रीय अधिवेशन में भाग लेने के लिये यात्रा का रिजर्वेशन करवा लिया है।
(2) क्या आपने अपने आगमन की सूचना मंगलायतन व जयपुर भेज दी है।

यदि अभी तक नहीं तो आज ही करें।

क्या आप चाहते हैं कि तत्त्वप्रचार के महायज्ञ में एक आहूति आपकी भी हो....

1. क्या आप अपने यहाँ वीतराग–विज्ञान पाठशाला खोलना चाहते हैं ?
2. क्या आप अपने यहाँ सत्साहित्य विक्रय केन्द्र खोलना चाहते हैं ?
3. क्या आप अपने यहाँ आध्यात्मिक प्रवचनों की कैसिट/ सी. डी./ डी. वी. डी./डी. वी. की लाइब्रेरी खोलना चाहते हैं ?
4. क्या आप वीतराग–विज्ञान शिक्षण–शिविरों का आयोजन करना चाहते हैं ?
5. क्या आप संगठन सम्बंधी कार्यों में रुचि रखते हैं ?
6. क्या आप फैडरेशन की शाखा खोलना चाहते हैं ?
7. क्या आप सामाजिक या सांस्कृतिक कार्यों में रुचि रखते हैं ? यदि हाँ तो.....

तत्काल सम्पर्क करें।

पण्डित पीयूषकुमार शास्त्री संगठन मंत्री, **Mob. :** 9413347829. **E-Mail :** ptstjaipur@yahoo.com	पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल महामंत्री, **Mob. :** 9870016988 **E-Mail :** parmatmb@yahoo.com

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी की 7 मई, 2008 को 119वीं जन्म-जयन्ति के अवसर पर विशेष

अन्तर्बाह्य व्यक्तित्व के धनी: कानजी स्वामी

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल, जयपुर

(डॉ. भारिल्ल का यह आलेख आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी की 87वीं जन्मजयन्ती के अवसर पर आज से 33 वर्ष पूर्व आत्मधर्म के संपादकीय के रूप में लिखा गया था; जिसे हम उनकी 119वीं पावन जयन्ती पर हूबहू प्रकाशित कर रहे हैं। ह्न संपादक)

''आत्मा....आत्मा....भगवान आत्मा सदा ही अति निर्मल है, पर से अत्यन्त भिन्न परम पावन पदार्थ है। यह त्रिकाली ध्रुव तत्त्व आनन्द का कन्द और ज्ञान का घनपिण्ड है। रंग, राग और भेद से भी भिन्न अतीन्द्रिय परमपदार्थ निजात्मा ही एक मात्र आश्रय करने योग्य है। उसका ही आश्रय करो, उसमें जम जावो, उसमें ही रम जावो।'' ह्न यह प्रेरणा देते देते लाखों की सभा में भी क्षणभर को ही सही अपने में रम जाने वाले, अपने में ही जम जाने वाले युगान्तरकारी आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी को लाखों आँखों ने अनेकों बार अपने में मग्न होते देखा होगा।

उन्होंने क्या कहा? उसका क्या भाव है? कानों से सुनकर चाहे बहुत कम लोगों ने समझ पाया हो, पर आँखों से देखने वालों ने यह अनुभव अवश्य किया होगा कि स्वामी जी जो कुछ बोल रहे हैं, वह अन्तर की गहराई से आ रहा है, वह मात्र व्याख्यान के लिए व्याख्यान नहीं है।

'गंगा गये गंगादास और जमना गये जमनादास' वाली बात यहाँ नहीं है। चाहे 50 व्यक्तियों की सभा हो; चाहे 50,000 की, चाहे अपने हो, चाहे पराये; वहाँ तो एक ही बात है ह्न पर और पर्याय से भिन्न आत्मा की। गिरगिट का सा रंग बदलने वाले तथाकथित आध्यात्मिक प्रवक्ताओं के समान 'अन्दर कुछ और बाहर कुछ और' वाली बात उनमें आप कभी नहीं पायेंगे।

उनकी वाणी में किसी का विरोध नहीं आता, मात्र अपना अविरोध झरता है। वे अपनी बात, अनुभव की बात, आगम की बात अपने तरीके से सबके सामने रखते हैं। कौन क्या गलत कह रहा है, गलत कर रहा है; यह जानने, सुनने या कहने के लिए उनके पास समय नहीं है; सत्य का अनुभव करने और निरूपण करने से अवकाश मिले तब तो यह सब किया जाय। यह तो उनका काम है, जिन्हें सत्य से कोई सरोकार नहीं है, धर्म जिनका धन्धा है। धर्म को जीवन मानने वाले स्वामीजी इन सब बातों से बहुत दूर हैं।

यदि आत्मज्ञान का नाम ही अध्यात्म है तो स्वामीजी सच्चे अर्थों में आध्यात्मिकसत्पुरुष हैं, क्योंकि उनका चिन्तन, मनन, कथन, अनुभवन सब-कुछ आत्मामय है। अधि = जानना, आत्म = आत्मा को ह्न इसप्रकार अपने आत्मा को जानना ही अध्यात्म है। अध्यात्म की उक्त परिभाषा पूज्य स्वामीजी पर पूरी तरह घटित होती है।

पुण्य और पवित्रता का सहज संयोग कलिकाल में सहज संभव नहीं है। जिनके जीवन में पवित्रता पाई जाती है, उनकी कोई बात नहीं सुनता और जिनके समक्ष लाखों मानव झुकते हैं, जिनको सर्व सुविधाएँ सहज उपलब्ध है; वे पवित्रता से बहुत दूर दिखाई देते हैं। जैसे उनका पावनता से कोई संबंध ही न हो। उन्हें पवित्रता से कोई सरोकार ही नहीं हो। स्वामीजी एक ऐसे युगपुरुष हैं, जिनमें पुण्य और पवित्रता का सहज संयोग है। उनमें सोना सुगंधित हो उठा है।

वे अन्तर्बाह्य व्यक्तित्व के धनी महापुरुष हैं। एक ओर जहाँ स्वच्छ शुभ्र श्वेत परिधान से सर्वांग ढकी एक दम गोरी भूरी विराट काया, उस पर उगते हुए सूर्य-सा प्रभासम्पन्न उन्नत भाल तथा कभी अन्तर्मग्न गुरुगंभीर एवं कभी अन्तर की उठी आनन्द हिलोर से खिलखिलाता गुलाब के विकसित पुष्प सदृश्य ब्रह्मतेज से दैदीप्यमान मुखमण्डल; जहाँ एक ओर व्याख्यान में उनकी वाणी से कुछ भी न समझ पाने वाले हजारों श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किए रहता है; वहीं दूसरी ओर स्वभाव से सरल, संसार से उदास, धुन के धनी, निरन्तर आत्मानुभव एवं स्वाध्याय में मग्न, सबके प्रति समताभाव एवं करुणाभाव रखने वाले विनम्र; पर सिद्धान्तों की कीमत पर कभी न झुकने वाले, अत्यन्त निस्पृही एवं दृढ़ मनस्वी, गणधर जैसे विवेक के धनी वज्र से भी कठोर और पुष्प से भी कोमल उनका आन्तरिक व्यक्तित्व बड़े-बड़े मनीषियों के आकर्षण का केन्द्र बना रहता है।

काठियावाड़ (आधुनिक गुजरात) की मिट्टी में ही न मालूम ऐसी क्या विशेषता है, जिसने एक ही शताब्दी में ऐसे दो महापुरुषों को जन्म दिया है; जिन्होंने लौकिक और पारलौकिक दोनों क्षितिजों के छोर पा लिए हैं। पहिले थे महात्मा गांधी और दूसरे हैं कानजी स्वामी। एक ने हमें लौकिक स्वतंत्रता का मार्ग ही नहीं दिखाया, अपितु स्वतंत्रता भी प्रदान की है और दूसरा हमें पारलौकिक, अलौकिक, आध्यात्मिक स्वतंत्रता का पथ प्रदर्शन कर रहा है, स्वयं उस पर चल रहा है, दूसरों को चलने का प्रेरणा स्रोत बन रहा है। एक साबरमती का संत कहा जाता था तो दूसरा सोनगढ़ का संत कहा जाता है।

एक बार इन दोनों महात्माओं का मिलन भी हुआ था, जब गांधीजी राजकोट में स्वामीजी के प्रवचन में प्रवचन सुनने पधारे थे।

सोनगढ़ आज तीर्थधाम बन गया है। जहाँ-जहाँ संतों के पग पड़ते हैं, वे स्थान तीर्थधाम बन जाते हैं। सोनगढ़ क्यों न तीर्थधाम बने? वहाँ तो आध्यात्मिकसत्पुरुष स्वामीजी चालीस वर्ष से आत्मसाधना कर रहे हैं, आत्मसाधना और आत्म-आराधना का पथ-प्रशस्त कर रहे हैं।

आज ऐसा कौन जैन है जो गिरनार और शत्रुंजय (पालीताना) गया हो और सोनगढ़ न गया हो; तथा वहाँ पर पहुँचकर भव्य मानस्तम्भ, विशाल जिन मन्दिर, सुन्दर समवशरण मंदिर एवं नवनिर्मित अद्वितीय परमागम मंदिर के दर्शन कर कृतार्थ न हुआ हो; जिसने शहरी कोलाहल से दूर, शान्त और निर्जन इस प्रान्त में आत्मा के नाद की गूँज न सुनी हो एवं जिसके कान में रंग, राग और भेद से भिन्न आत्मा की बात कान में न पड़ी हो।

आज सोनगढ़, समयसार और कानजी स्वामी पर्यायवाची हो गये हैं। सोनगढ़ में कुन्दकुन्दाचार्य के पंच परमागमों को परमागम मंदिर में संगमरमर के पाटियों पर उत्कीर्ण करा दिया गया है। सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य का इससे बड़ा स्मारक और क्या होगा? पर कानजी स्वामी तो आचार्य कुन्दकुन्द और उनके समयसार के जीवन्त स्मारक हैं। क्यों न हो? समयसार ने उनके जीवन को जो बदल डाला है।

समयसार पाकर उन्होंने क्या नहीं पाया, क्या नहीं छोड़ा ? सर्वस्व पाया और सर्वस्व छोड़ा। श्रीमद् रायचन्द्र ने समयसार लाकर देने वाले को खोवा भर मुद्रायें दी थीं, पर कानजी स्वामी ने तो परम्परागत धार्मिक सम्प्रदाय ही नहीं; उसका गुरुत्व, गौरवपूर्ण जीवन, यश ह्न यहाँ तक कि प्राणों तक का मोह भी छोड़ा।

वे प्राणों की बाजी लगाकर, प्राणों की कीमत पर दिगम्बर जैन हुए हैं।

दिगम्बरों ने उन्हें क्या दिया? यदि दिगम्बरों ने उन्हें समयसार दिया, मोक्षमार्गप्रकाशक दिया तो उन्होंने दिगम्बरों को समयसार का सार और मोक्षमार्गप्रकाशक का मर्म दिया। यदि उन्हें दिगम्बरों से एक समयसार मिला, एक मोक्षमार्ग प्रकाशक मिला तो उन्होंने समयसार और मोक्षमार्गप्रकाशक को दिगम्बरों के घर–घर तक पहुँचा दिया है।

कौन जानता था कि काठियावाड़ के छोटे से ग्राम उमराला में आज 87 वर्ष पूर्व वि. सं. 1947 (गुजराती 1946) की बैसाख सुदी 2 रविवार के दिन जन्मा बालक कहान इतना महान् होगा।

श्वेताम्बर स्थानकवासी संप्रदाय में जन्मा बालक कहान बचपन से ही धार्मिकवृत्ति का शान्त बालक था। माता उजमबाई और पिता मोतीचंदजी श्रीमाल को एक ज्योतिषी ने बालक कहान के महापुरुष होने का स्पष्ट संकेत दिया था; अतः उनका पुत्र–प्रेम सहज द्विगुणित हो गया था।

साधारण शिक्षा के उपरान्त उनके जन्मस्थान के ही निकटस्थ कस्बा पालेज में उनके बड़े भाई खुशालचन्दजी के साथ उन्हें भी दुकान पर बिठा दिया गया, पर उनका मन उसमें नहीं रमा। वे उदासवृत्ति से, पर कुशलतापूर्वक, ईमानदारी और पूरी प्रामाणिकता के साथ कार्य करने लगे।

सोलह वर्ष की वय में एक बार उन्हें बड़ौदा के कोर्ट में जाना पड़ा, वहाँ उन्होंने समस्त सत्य को बड़े धैर्य और गंभीरता के साथ रखा। न्यायाधीश पर उनकी सरलता, सहजता, स्पष्टवादिता का ऐसा असर हुआ कि बिना गवाह के ही उनकी बात को प्रमाण मानकर निर्णय दे दिया।

उठते यौवन में उन्होंने ''भक्त ध्रुव'' आदि नाटक भी देखे। सामान्य युवकों का मन नाटकों के शृँगारिक प्रसंगों में अधिक रमा करता है; पर उनका मन वैराग्यपोषक प्रकरणों में ही अधिक रमा करता था। जिसकी चर्चा वे आज भी बड़े ही भाव–विभोर हो, कभी–कभी अपने प्रवचनों में किया करते हैं।

अर्न्तव्यापार के अभिलाषी कहान का मन बाह्य व्यापार में न रमा। जब उनसे शादी का प्रस्ताव किया तो उन्होंने साफ–साफ कह दिया कि मुझे तो दीक्षा लेने का भाव है, मैं शादी नहीं करूँगा।

अरे... अरे.. ! उन्होंने दीक्षा लेने की मात्र बात नहीं कही, 22 वर्षीय उठते यौवन में ही उन्होंने स्थानकवासी साधु हीराचन्दजी के पास वि. सं. 1970 में अगहन सुदी 9 रविवार के दिन बड़े ही ठाठ–बाट से दीक्षा ले ली; पर दीक्षा–जुलूस में हाथी पर सवार होते समय दीक्षा–वस्त्र फट गया। उस समय तो किसी की समझ में कुछ न आया, पर अब कभी–कभी स्वामीजी स्वयं कहते हैं कि मुझे भी शंका हो गई थी कि सच्चा साधुपन यह नहीं है।

यद्यपि गृहस्थावस्था में भी आपने श्वेताम्बर शास्त्रों का अध्ययन–मनन किया था; तथापि बाद में दीक्षित होने पर उनका बहुत गंभीर अध्ययन किया, पर उनके हाथ कुछ भी न लगा। उन्हें ऐसा लगा कि जो मेरा प्राप्तव्य है, वह इनमें नहीं। यद्यपि वे उन पर व्याख्यान करते, प्रवचन करते और हजारों लोग मंत्रमुग्ध भी हो जाते, तथापि वे कुछ रिक्तता, कुछ कमी अनुभव करते रहते।

स्थानकवासी सम्प्रदाय में उनकी महान विद्वान, लोकप्रिय प्रवचनकार और कठोर–साधक साधु के रूप में प्रतिष्ठा थी। उनके भक्तगण उन पर मुग्ध थे, पर वे नहीं; वे कुछ और खोज रहे थे।

अचानक वि. सं. 1978 में समयसार उनके हाथ लगा, मानो निधि मिल गई। जिसकी खोज थी, वह पा लिया। वे उसे ले एकान्त जंगल में चले गये। उसके पढ़ने में मग्न हो गये, जाता समय ध्यान ही न रहा।

उनका अन्तर पुकार उठा कि 'सत्य पंथ निर्ग्रन्थ दिगम्बर ही हैं' पर ...।

वि. सं. 1982 में मोक्षमार्गप्रकाशक हाथ लगा, यह ग्रन्थ भी स्वामीजी को अपूर्व लगा, यह ग्रंथराज अपूर्व है भी। यह उनको इतना भाया कि उसका सातवाँ अध्याय तो उन्होंने अपने हाथ से ही लिख लिया, जो आज भी सुरक्षित है।

यह अन्तर्बाह्य का संघर्ष वि. सं. 1991 तक चलता रहा। आखिरकार इस नरसिंह ने उसी वर्ष चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को साधारण गाँव सोनगढ़ में बाड़ा तोड़ ही डाला, मुँहपट्टी उतार दी और अपने को दिगम्बर श्रावक घोषित कर दिया। क्या विचित्र संयोग है कि यह शुभकार्य महावीर जयन्ती के दिन ही सम्पन्न हुआ।

इस परिवर्तन से सम्प्रदाय में खलबली मच गई। चारों ओर से भय और प्रलोभनों के पासे फेंके गये पर सब बेकार साबित हुए। धर्मान्धों ने क्या नहीं कहा और क्या नहीं किया पर ''मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दुःख सुक्खं'' – की नीति का अनुसरण करते हुए स्वामीजी अडिग रहे।

कुछ दिनों तक वे सोनगढ़ के समीप टेकड़ी पर स्थित एक अनन्य अनुयायी के टूटे–फूटे मकान में रहे, जो आज भी उसी हालत में विद्यमान है और जिसे गुरुदेव स्वयं कभी–कभी अपने अनुयायियों को बड़े ही प्रेम से ऊँगली के इशारे से दिखाया करते हैं।

साम्प्रदायिकता के मोह में हो गये विरोधियों की कषाय जब शान्त होने लगी तो वे पुण्य और पवित्रता के धनी गुरुदेव के दर्शनार्थ झुंड के झुंड आने लगे। कुछ यह देखने भी आते थे कि अब कैसा क्या चल रहा है? पर उनके समक्ष आकर, उनके आचरण व व्यवहार को देख एवं अभूतपूर्व प्रवचनों को सुनकर नत–मस्तक हुए बिना नहीं रहते।

कुछ समय बाद जन्मजात दिगम्बर जैन भी उनके पास पहुँचने लगे; कुछ प्रेम से, कुछ भक्ति से, कुछ कुतूहल से; पर जो भी उनके पास पहुँचता, उनका हुए बिना नहीं रहता, उनके अन्तर्बाह्य व्यक्तित्व से प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। उनकी वाणी में तो आचार्य कुन्दकुन्द के अमृत का जादू है ही; पर उनका बाह्य व्यक्तित्व भी कम आकर्षक नहीं है।

उनके इस आकस्मिक आकर्षण से विरोधी खेमों में खलबली मच गई जो आज भी देखी जा सकती है। 'जो वहाँ जायेगा, उनका हो जायेगा' इस भय से आशंकित और आतंकित होकर वहाँ न जाने की प्रतिज्ञाएँ दिलाई जाने लगीं, पर तूफान को कौन रोक सकता है? अगर गायक कवि 'युगल' की ''लो रोको तूफान चला रे, पाखण्डों के महल ढहाता, लो रोको तूफान चला रे।'' ह्न यह पंक्तियाँ आज भी चुनौती दे रही हैं।

आध्यात्मिक क्रान्ति का यह सूत्रधार जहाँ भी जाता है, विरोधी भी उसका स्वागत करते हैं, सम्मान करते हैं, अभिनन्दन करते हैं। चार–चार बार सम्पूर्ण भारत की ससंघ यात्रायें की हैं, इस महापुरुष ने। पचास से अधिक जिन–मन्दिरों का निर्माण हुआ है, इसकी पावन प्रेरणा से। बीस लाख से ऊपर का साहित्य प्रकाशित हुआ है इनकी कृपा से। गाँव–गाँव में तत्त्वचर्चा के केन्द्र स्थापित हो गये हैं। छोटे से गाँव में भी आप व्यापारियों को निश्चय–व्यवहार, निमित्त उपादान की चर्चा करते पायेंगे। यह सब इस महा मानव का प्रभाव है कि जिसने आज के इस भौतिकतावादी युग में भी आध्यात्मिक वातावरण बना दिया।

वे इस युग के अद्वितीय महापुरुष हैं। ऐसा कोई दूसरा महापुरुष बताएँ, जिसने इनके समान अनंत प्रशंसाओं और निंदाओं का आज तक उत्तर भी न दिया हो और जो जगत की प्रशंसा और निंदा से इनके समान अप्रभावित रह अपनी गति से चल रहा हो, जिसने समय (शुद्धात्मा) और समय (टाइम) की ऐसी साधना की हो कि जिसमें समयसार प्रतिबिम्बित हो उठा हो और लोग जिसकी दिनचर्या से अपनी घड़ियाँ मिला लेते हों, उस अन्तर्बाह्य व्यक्तित्व के धनी महापुरुष को शत–शत प्रणाम; शत्–शत् प्रणाम !! ●

मंगलायतन प्रशिक्षण

ा–शिविर पत्रिका

17 अप्रैल 2008, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

विचार गोष्ठी सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ राजस्थान जैन सभा द्वारा भट्टारकजी की नसियाँ में दिनाँक 30 मार्च, 08 को भगवान आदिनाथ व भरत चक्रवर्ती के जन्म जयन्ती की पूर्व संध्या पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी में तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने '**भगवान आदिनाथ और भरत चक्रवर्ती का विश्व को योगदान**' विषय पर अपने विद्वतापूर्ण विचार व्यक्त कर सभी को लाभान्वित किया।

वीडियो सी.डी. का विमोचन

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन रजि. जबलपुर द्वारा बाल वर्ग को संस्कारित करने के प्रयासों के अन्तर्गत अग्रिम कड़ी के रूप में पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर और श्री भूषणजी उज्जैन द्वारा निर्देशित '**जिनधर्म की कहानियाँ**' वीडियो सी. डी. तैयार हुई है।

इस सी. डी. का विमोचन तीर्थधाम सिद्धायतन द्रोणगिरि के पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर संस्था के सहयोगी श्री शांतिभाई रिखबदास शाह, दादर के करकमलों से किया गया।

इसमें सोमा सती, अंजन चोर, अमर सिंह, सत्यवादी चोर, रानी चेलना आदि की कहानियों का संकलन किया गया है।

वैराग्य समाचार

01. देवलगांवराजा (महा.) निवासी श्री देवचंद नेमिनाथ सा. जैन का दिनांक 20 फरवरी, 08 को देहावसान हो गया। आप भगवान महावीर आचार्य कुन्दकुन्द दिगंबर जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट बुलढाणा के उपाध्यक्ष थे। आप सरल स्वभावी, स्वाध्याय प्रिय व्यक्ति थे।

02. पीसांगन (राज.) निवासी श्री गुलाबचंदजी दोशी का दिनांक 16 मार्च,08 को देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में पं. टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जैनपथ प्रदर्शक व वीतराग-विज्ञान को कुल 2500/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही मुक्ति की प्राप्ति करें ह्न यही कामना है।

स्लिपडिस्क रोगी ध्यान दें !

सम्पूर्ण उपचार बिना दवा, बिना कसरत, बिना चीरफाड, बिना आराम किए विश्व की नवीनतम तकनीक माइक्रो एक्यूप्रेशर द्वारा शीघ्र उपचार।

डॉ. पीयूष त्रिवेदी (मो.) 09828011871

गोल्ड मेडलिस्ट, बी.ए. एम.एस., एम.डी. (एक्यू.)

डिप्लोमा इन योगा, सुजोक (मास्को) एफ.ए.आर.सी. एस. (लंदन)

मेडिनोवा पोली क्लीनिक, केसरगढ, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर

समय : सायं 6 बजे से 9 बजे तक, रविवार को प्रात: 8 से 12 बजे तक

नोट – एक्यूप्रेशर सेवा समिति द्वारा 300 से अधिक नि:शुल्क शिविर आयोजित।

अन्य रोग : जोडों का दर्द, गर्दन का दर्द, मोटापा, मायोपैथी, मानस विकृतियां, मधुमेह तथा उच्च रक्तचाप आदि की सफल चिकित्सा।

ग्रीष्मावकाश का सदुपयोग कैसे करें ?

यदि आप अपने बालकों के ग्रीष्मावकाश का सदुपयोग करना चाहते हैं, उन्हें धार्मिक ज्ञान के साथ-साथ नैतिक आचार-व्यवहार का ज्ञान दिलाना चाहते हैं, तो उन्हें **तीर्थधाम मंगलायतन (अलीगढ़-उ. प्र.) में दिनांक 18 मई से 4 जून, 2008 तक** आयोजित होनेवाले शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर में अवश्य भेजें।

इस शिविर में प्रतिदिन युवा व किशोर वर्ग हेतु जैन दर्शन की विश्व व्यवस्था व वैज्ञानिकता तथा जैनदर्शन की जीवन में उपयोगिया विषय पर कक्षा का आयोजन किया जायेगा।

साथ ही बाल वर्ग हेतु तीनों समय विभिन्न बाल विषयों पर भी कक्षाओं का आयोजन किया जायेगा। उनके व्यक्तित्व विकास आदि की कक्षाएँ भी आयोजित की जायेंगी।

बालकों के मनोरंजन हेतु रात्रि में धार्मिक कविताएँ, नाटक, चित्रकला, प्रश्नमंच आदि सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित होंगे, जिसमें सभी विद्यार्थियों को भाग लेने का मौका मिलेगा।

सभी कक्षाएँ पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर, पण्डित संजयजी शास्त्री अलीगढ एवं डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया, मुम्बई के निर्देशन में विभिन्न अध्यापकों द्वारा संचालित की जायेगी। **ह्न प्रबन्ध सम्पादक**

रत्नत्रय विधान सम्पन्न

इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन मारवाड़ी मंदिर में दिनांक 7 से 9 मार्च, 08 तक रत्नत्रय मण्डल विधान का आयोजन किया गया। विधि-विधान के समस्त कार्य श्री अनिलकुमारजी जैन इन्जिनियर भोपाल के निर्देशन में समाज के माध्यम से सम्पन्न हुये। इस अवसर पर आपके मार्मिक प्रवचनों का लाभ भी समाज को मिला।

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- ४ बापूनगर, जयपुर - ३०२०१५ (राज.)
फोन : (०१४१) २७०५५८१, २७०७४५८
फैक्स : (०१४१) २७०४१२७